ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)09-14
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. दिवाकर चौधरी

सहायक प्राध्यापक

हिन्दी विभाग, श्री राधाकृष्ण गोयनका महाविद्यालय,सीतामढ़ी, बिहार

Corresponding Author :

डॉ. दिवाकर चौधरी

सहायक प्राध्यापक

हिन्दी विभाग, श्री राधाकृष्ण गोयनका महाविद्यालय,सीतामढ़ी, बिहार

दुष्यंत कुमार के काव्य में सामाजिक यथार्थ

दुष्यंत कुमार आधुनिक हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर के रूप में लब्ध प्रतिष्ठित हैं । उनके प्रकाशित कुल तीन काव्य-संग्रह-'सूर्य का स्वागत' (1957), 'आवाजों के घेरे' (1963), 'जलते हुए वन का वसंत' (1973), एक गीति नाट्य- 'एक कंठ विषपायी' (1963) और एक गज़ल-संग्रह -'साये में धूप' (1975) है। दुष्यंत कुमार अपने गज़ल-संग्रह 'साये में धूप' के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं। 'साये में धूप' ने उनको प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचाया । 'साये में धूप' के गजलों से उन्होंने हिन्दी गज़ल साहित्य को नई अर्थवत्ता और पहचान दी है।

साहित्य को 'समाज का दर्पण' कहा जाता है । आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने 'हिंदी साहित्य के इतिहास' में लिखा है कि-"जब कि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है....जनता की चित्तवृत्ति बहुत कुछ राजनीतिक, सामाजिक, सांप्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थिति के कारण होती है"[1]। इस प्रकार साहित्य और समाज में अभिन्न सम्बन्ध है । साहित्य और समाज एक दूसरे से गहरे जुड़े होते हैं । जहाँ एक और समाज से साहित्य को विषय और प्रेरणा मिलती है तो, दूसरी ओर साहित्य समाज को जागृत, आंदोलित और सामाजिक समस्याओं की ओर ध्यानाकर्षित करने का कार्य करता है ।

डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय का अभिमत है कि "विश्व के किसी भी साहित्य का जन्म उस देश के समाज की आवश्यकताओं का प्रतिफल है। साहित्य के इतिहास के विभिन्न युग, युग विशेष के ही संदर्भ हैं। हिंदी साहित्य के इतिहास में आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिककाल साहित्य के युग है। इन सभी युगों की प्रेरणा भूमि समाज ही रही है"[2]।

आधुनिक हिंदी साहित्य में सामाजिक सरोकारों को गजलों के माध्यम से कलात्मक और सशक्त अभिव्यक्ति मिली है । दुष्यंत कुमार हिन्दी गज़ल को सामाजिक यथार्थ से जोड़ते हैं। उनकी प्रारंभिक रचना कविता रही है, गजल विधा को अपनाने और रचना करने के कारणों के सन्दर्भ में उनका कथन है- "मैं महसूस करता हूँ किसी भी कवि के लिए कविता में एक शैली से दूसरी शैली की ओर जाना कोई अनहोनी बात नहीं बल्कि एक सहज और स्वाभाविक प्रक्रिया है। किंतु मेरे लिए बात सिर्फ इतनी नहीं है। सिर्फ पोशाक या शैली बदलने के लिए मैने गजलें नहीं कहीं। उसके कई कारण हैं जिनमें सबसे मुख्य है कि मैंने अपनी तकलीफ को...उस शदद तकलीफ, जिससे सीना फटने लगता है, ज्यादा से ज्यादा सच्चाई और समग्रता के साथ ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाने के लिए गजल कही है"[3]।

ग़ज़लकार माधव कौशिक ने लिखा हैं "ग़ज़ल के निरंतर विकास ने यह सिद्ध कर दिया है कि समकालीन समाज के तमाम अंतर्विरोधों व संकटपूर्ण स्थितियों को इस विधा के माध्यम से बखूबी बयान किया जा सकता है। सामाजिक विसंगतियों तथा विद्रूपताओं के साथ-साथ मानवमन की गहनतम भावनाओं को अभिव्यक्त करने तथा सूक्ष्म संवेदनाओं को वाणी प्रदान करने की अपार क्षमता और सामर्थ्य इस काव्य विधा में खूब है"[4]।

डॉ. उर्मिलेश मानते है कि आज की हिंदी ग़ज़ल व्यक्ति और समाज को व्याख्या देने वाली काव्य विधा है। ग़ज़लों की सामाजिक प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए ज्ञानप्रकाश विवेक लिखते हैं - "यह समय अंतर्विरोधों, जटिलताओं और संबंधों के स्खलन का है, पुरानी मान्यताएँ, पुराने केन्द्र ढह रहे हैं। नये मूल्य, समाज को नया स्थापत्य दे रहे हैं। वे मूल्य बेशक बाज़ारवादी संस्कृति से छनकर आये हैं, और ये मूल्य वस्तुतः बेचैनी पैदा कर रहे हैं समाज में जो अंतर्विरोध दिखाई देते हैं, कहीं न कहीं उन बनते बिगडते मूल्यों के कारण भी है। कवि समाज की इकाई होता है और वह आम लोगों से कहीं अधिक सूक्ष्मता से जीवन की बदलती स्थितियों का मूल्यांकन करता हैं"[5]।

संतोष कुमार तिवारी लिखते हैं "दुष्यंत कुमार समाज के उस वर्ग विशेष के चरित्र को अच्छी तरह पहचानता है जो खून बहाने की स्थिति में तटस्थ बनकर बैठ जाते है और समय आनेपर दुकाने लगाकर बैठ जाते हैं"[6]। दुष्यंत कुमार का काव्य-फलक काफी विस्तृत है| उन्होंने अपने कविकर्म और कविधर्म के बारे में वे स्वयं लिखा है-

"सीमाओं में बंधा नहीं हूँ धरती मेरा देश है

मेरे कवि का धर्म जागरण औ जन उन्मेष है"[7]|

विजयवहादुर सिंह कवि दुष्यंत के बारे में लिखते हैं "वे तो उन साहसिक प्रतिभाओं में से थे जो साहित्य की परम्परा के अदृश्य पारावार और अनुभूत जीवन-यथार्थ के अपरिभाषित कुरूक्षेत्र के बीच पहुँच बेखटके खड़ी हो जाया करती है। परम्परा जहाँ सार्थक प्रयोग और आधुनिकता नवोन्मेषी सृजनशीलता में बदल उठती है। कहना तो चाहिए कि वे साहसी नहीं, एक दुस्साहसी प्रतिभा थे"[8]।

सामान्यतः अन्य कवियों की तरह ही किशोर कवि दुष्यंत कुमार का प्रारम्भिक कविकर्म भी प्रायः प्रेममय दिखाई पड़ता है। उनका युवाकवि मन प्रेमिका की विभिन्न मुद्राओं पर आनन्द और उल्लास से भर उठता है तो कभी उसकी निठुरता युवा कवि के मन को विषाद और निराशा से भर देती है। उनकी आरंभिक कविताओं में हृदयगत भावों के इसी आरोह-अवरोह का वर्णन हुआ है -

"चिर प्रतीक्षा में तुम्हारी गल गए लोचन हमारे

कूल हूँ ऐसा जगत का

बुझ न पाई प्यास जिसकी

थक गया पी-पी प्रणय-जल

मिट न पाई साध जिसकी "[9]

यहाँ किशोर कवि की मान्यता और कामना है कि हमारी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था प्रेम करनेवालों को एक होने से रोकती हैं , जिससे बहुत सारे युवाओं का जीवन बर्बाद हो जाता है, इसलिए वे एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जहाँ समाज में प्रेम को खुले हृदय से स्वीकारा जाता हो । कवि कल्पना के ऐसे लोक में जाना चाहते हैं जहाँ प्रेम सहज और सहर्ष स्वीकार्य हो। उसे जाति और मान-मर्यादा की कसौटी पर जाँचा परखा न जाता हो। उनकी कविता 'कितना निष्ठुर यह जन समाज' में प्रेम के प्रति सामाजिक नजरिये की अभिव्यक्ति बहुत सूक्ष्मता से हुई है-

"हा! इस समाज के कारण ही

कितने अबोध जीवन खोते

कितनी कलियाँ और पुष्प नित्य

इस बलिवेदी पर बलि होते

कलिकाओं के सिर पर चढ़ता

उस शुष्क पुष्प का प्रणय-ताज

मैं उब चुका इस जीवन से

जिसमें पग-पग पर दुःख मिलें

मेरी तो इच्छा है प्रिये आओ

हम तुम कहीं दूर चलें स्वप्नों का हो रंगीन देश

हो अस्त-व्यस्त दुर्बल रिवाज"[10] !

उनकी आरम्भिक कविताओं में बहुत सारी कविताएँ प्रेम पर हैं। 'चाँद सितारों का वह सुन्दर देश', 'आ रही मुझको तुम्हारी याद', 'विकल वेदनाएँ', 'मेरी वो आँखें पथराई', 'मत पूछो कैसे रात कटी है मेरी', 'खिल रही चाँदनी क्सुधा पर', 'दूजे को वरदान मिला क्यों', 'प्रिय तुम गेले गीत न गाना', 'अंतर नहीं दिखाया जाता' आदि कविताएँ उनकी प्रेम-भावना से संबंधित है। इन कविताओं में संयोग के सुखद क्षणों की अपेक्षा वियोग की असहनीय पीड़ा अधिक चित्रित हुई है। अनुभा दत्त अधिकारी उनकी आरंभिक कविताओं के संबंध में लिखती है "उनके इन गीतों (आरंभिक कविताओं) में प्रेम एक प्रधान और अनिवार्य विषय है। बल्कि यह कहना अधिक सच होगा कि उनके ये गीत अधिकतर रोमानी प्रेमगीत ही हैं। इसके अलावा कुछ नहीं। उनकी सारी कोशिश, छटपटाहट, आसक्ति, उमंग, उल्लास, आशा-निराशा, पश्चाताप सबके पीछे उनके किशोर प्रेम की सफलता असफलता काम कर रही है"[11]।

दुष्यंत कुमार की कई प्रारंभिक प्रेम कविताएँ अपनी पत्नी को केंद्रित करके लिखी गई है जिनमें प्रवास के दिनों की व्यथा मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त हुई है। 'पत्नी के प्रति-1', 'पत्नी के प्रति-2', 'तुम्हारी याद में पागल प्रवासी लौट आया है' आदि कविताओं में अपनी पत्नी के प्रति कवि की प्रेम-भावना को देखा जा सकता है | किन्तु कवि का हृदय धीरे-धीरे प्रेम के काल्पनिक वायवीय लोक से यथार्थ के धरातल पर उतरता है और देश और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिए अपने कविकर्म में निरत होता है। समाज और देश में शोषण के व्याप्त चक्र और लोकतंत्र की हत्या करनेवालों की असंवेदनशीलता को दर्शाते हुए उसपर करारा व्यंग्य करता है। सम्पन्न वर्ग द्वारा विपन्न वर्ग का आर्थिक, मानसिक और दैहिक शोषण की प्रक्रिया आजादी के बाद भी बदस्तूर जारी है। उनकी कविता में इस शोषण प्रक्रिया की कटु और बेबाक अभिव्यक्ति मिलती है -

" तब न धन के गर्व में यों सूझती मस्ती किसी को

तब न अस्मत निर्धनों की सूझती सस्ती किसी को[12]"

उनकी अनेकों कविताओं में स्वतंत्रता पश्चात् देश और समाज में राजनेता और पूजीपति वर्ग के छल-छद्म, स्वार्थवृति तथा चारित्रिक पतन का यथार्थ अभिव्यक्त हुआ है -

" साफ वस्त्र है पहिने लेकिन अंतर काले काले हैं

जान-जान अनजान बने ये बनते भोले भाले है[13]।"

दुष्यंत कुमार का कविहृदय समाज के वीभत्स यथार्थ और समाज में रहनेवालों की त्रासदायक पीड़ा को देखकर बहुत क्षुब्ध और बेचैन दीखता है। उनकी कविता नयी कविता की अतिबौद्धिकता को चुनौती देती है। उनकी सहज अनुभूति उनके काव्य में इस सहज आत्मीयता और ईमानदारी से अभिव्यक्त है कि वे सहज ही पाठकों की संवेदना से जुड़ जाती हैं। उनकी कविताओं में कथ्य भावों से आप्लावित है, वे बनावटी नहीं हैं, अपितु जीवन की कसौटी पर कसकर निकले हुए हैं, इनमें झूठी बौद्धिकता और घड़ियाली आँसू वाली संवेदनशीलता नहीं दिखाई पड़ती। इन शब्दों में ताकत है, जूझने की, संघर्ष करने की। ये शब्द जीवन-सत्य से परिपूर्ण है।

दुष्यंत कुमार नई कविता के दौर के रचनाकार है। नई कविता निराशा, कुंठा और अनास्था की कविता मानी जाती है। पर दुष्यंत कुमार की कविता इस दौर की नयी व्याख्या प्रस्तुत करती है। उनकी कविता आस्था, अनास्था का दमन करती, पराजय बोध से जय प्राप्ति , विपरीत परिस्थिति में भी जिजिविषा की अभिव्यक्ति की कविता है। इसी कारण नई कविता के दौर में वे 'सूर्य का स्वागत' संग्रह के सहारे निराशा के घनघोर अंधकार को चीरकर हुए आशा का सूर्योदय लेकर पाठकों के समक्ष उपस्थित होते हैं। बनय सिंह 'सूर्य का स्वागत' संग्रह को नई कविता की प्रवृतियों के सन्दर्भ में परखते हुए लिखते हैं "दुष्यंत कुमार नयी कविता के उस स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं जिसमें पराजय पीड़ा न देकर आगे बढ़ने का सन्देश देती है। दुष्यंत कुमार जैसे कवि की कविताएँ नयी कविता के उग्रर लगे हुए इस आरोप को झुठलाती है कि नयी कविता पराजयवादी कुंठित मनोवृतियों का पुंज है। दुष्यंत के लिए हर पीड़ा प्रेरक बनती है।"[14]

उर्दू-फारसी गज़ल की प्रेमपरक परम्परागत परिपाटी से अलग दुष्यंत कुमार ने अपनी गज़ल को इश्क और माशूक की रंगीन और काल्पनिक दुनिया से निकालकर देश और समाज के यथार्थ की कठोर धरातल पर उतारा और पाठकों को रूबरू कराया। गजल के वर्ण्य और कथ्य में परिवर्तन कर दुष्यंत ने गज़ल को नई दिशा और अर्थवत्ता दी है। उनकी गज़लों के बारे में कमलेश्वर लिखते हैं "दुष्यंत कुमार की गजलों ने एक बड़ी और ऐतिहासिक भूमिका निभाई है, और वह है सांस्कृतिक और इंसानी मूल्यों के एकीकरण और भाषायी सरमाए को साथ लाने की भूमिका ... नाजिम हिकमत, पाब्लो नेरूदा की कविताएँ अपने देशों में जो और जितना कर सकीं, उससे कहीं ज्यादा दुष्यंत की गज़लों ने भारतीय लोकतंत्र को बचाने में की है"[15]।

उनका उद्देश्य सिर्फ लिखने के लिए लिखना या सिर्फ प्रसिद्धि नहीं था। वे स्वयं अपनी रचनाधर्मिता के सन्दर्भ लिखते हैं कि -

"सिर्फ हंगामा खड़ा करना करना मेरा मकसद नहीं,

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिये ।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,

हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए"[16]।

दुष्यंत कुमार ने आजादी के पश्चात् भारतीय समाज में व्याप्त मानवीय शोषण, उत्पीड़न, अभाव और बेबसी को अभिव्यक्ति देकर आजाद भारत की सच्ची तस्वीर चित्रित करने और पाठकों को चिंतन करने के लिए मजबूर किया है। आपातकाल और तत्कालीन सरकार की नीतियों की आलोचना करने का जो साहस दुष्यंत कुमार के काव्य में मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। वे अपनी गज़लों के माध्यम से तत्कालीन सरकार की नाकामी और नीतियों पर तीखा व्यंग्य करते हैं -

"इस कदर पाबन्दी-ए-मजहब कि सदके आपके,

जब से आजादी मिली है मुल्क में रमजान है"[17]।

सरदार मुजावर दुष्यंत कुमार की गज़लों के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखते हैं "जहाँ उन्होंने अपनी गज़लों के माध्यम से व्यक्ति एवं समाज की आँखें खोलने का प्रयास किया है, वहाँ उन्होंने समाज की बुराइयों को खत्म करने के लिए क्रांति की बात भी कही है। निःसन्देह उनकी हर गज़ल हमें एक मशाल की तरह नजर आती है जिसके प्रकाश में चाहे व्यक्ति हो अथवा समाज हो - दोनों ही विकास के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं"[18]।

दुष्यंत कुमार ने गज़ल को समसामयिक सामाजिक, राजनीतिक सन्दर्भों और जीवन के कटु यथार्थ से जोड़ कर नई अर्थवत्ता प्रदान की है। उनका अपनी रचनाओं के सन्दर्भ में कथन है कि-

"मेरे गीत तुम्हारे पास सहारा पाने आएँगे,

मेरे बाद तुम्हें ये मेरी याद दिलाने आएँगे"[19]।

दुष्यंत कुमार ने अपने गीति-नाट्य 'एक कंठ विषपायी' के माध्यम से पौराणिक आख्यान को समकालीन सच्चाईयों से जोड़ कर व्यापक आयाम प्रदान किया है। इस गीति नाट्य के बारे में दुष्यंत कुमार ने देवीदास शर्मा को एक पत्र लिखा था जिसमें वे इस

नाटक के कथ्य पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं- "'एक कंठ विषपायी' पौराणिक आख्यान पर आधारित होते हुए भी अपनी एप्रोच में आधुनिक है। उसमें कई प्रश्न एक साथ उठाये गये हैं। आधुनिक प्रजातांत्रिक पद्धति की शिथिलता... शासन या सत्ता की व्यक्तिगत सनक या लिप्सा के कारण युद्ध... युद्ध का औचित्य और उससे घुटता टूटता हुआ सामान्य आदमी जिसका प्रतीक सर्वहत है लेकिन उसकी मूल संवेदना यह है कि परम्परा से जुड़ा हुआ व्यक्ति या समाज... उस परम्परा के टूटने को या जोड़े जाने को सहज स्वीकार नहीं करता, वह या तो विक्षुब्द और कृपित हो उठता है या स्वयं टूटता है Xxx किंतु जो महान व्यक्तित्व होते हैं वे परम्परा से कटकर नये मूल्यों को अंगीकार कर लेते हैं। शंकर ने जिस प्रकार थोड़े ही समय में नयी स्थितियों को स्वीकार किया... इसलिए उन्हें एक कंठ विषपायी कहा गया है"[20]।

दुष्यंत कुमार की स्पष्ट मान्यता है कि परम्परा के जर्जर और अनुपयोगी होने के उपरांत उसको त्यागकर नये मूल्यों को सहर्ष स्वीकार कर लेने में ही व्यक्ति और समाज की भलाई है।

'एक कंठ विषपायी' में कवि ने आधुनिक प्रजातंत्र की विसंगतियों पर करारा प्रहार किया है। प्रेमशंकर ने लिखा है- "एक कंठ विषपायी का राजनीतिक एहसास तीखा है और अपने सामयिक सन्दों से उपज कर भी आगे बात कहता है। प्रजातंत्र से जुड़े हुए कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दे और कई जलते हुए सवाल यहाँ आए हैं और इसके लिए दुष्यंत ने सर्वहत जैसे सामान्य जन के पात्र को चुना है, सर्वहारा का समीपी। इसीलिए सर्वहत लगभग हर दृश्य में मौजूद है। पहले दृश्य में वह पक्षी को मुक्त करता है, दूसरे में वह छाया हुआ है, तीसरे में उसे मोहबद्ध शंकर के सामने गुंजाइश नहीं मिलती और चौथे दृश्य में वह देवलोक के नेताओं पर तीखे व्यंग्य करता है"[21]।

आधुनिक युग में सम्पूर्ण मानवता के समय सबसे बड़ी चुनौती है-युद्ध। 'एक कंठ विषपायी' की पृष्ठभूमि में भारत-चीन युद्ध है। कवि युद्ध की विभीषिका के साक्षी हैं। इसीलिए 'एक कंठ विषपायी' में रचनाकार ने युद्ध के औचित्य-अनौचित्य पर काफी गम्भीर विवेचन किया है और उनका मानना है कि युद्ध के पीछे हमेशा एक ठोस और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण होना चाहिये, अन्यथा युद्ध 'आत्मरक्षा' न होकर सम्पूर्ण मानव जाति के लिए आत्मघाती साबित होगा। -"युद्ध - अधिक से अधिक विशिष्ट परिस्थितियों में समाधान का सम्भव कारण बन सकता है, यही नियम है -लेकिन कोई शासक मन में स्वयं युद्ध को, किसी समस्या का किंचित भी समाधान समझे तो भ्रम है"[22]।

निष्कर्षतः दुष्यंत कुमार अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने समकालीन देश और समाज में व्याप्त समस्याओं से संवाद भी करते हैं और निराकरण का साहित्यिक प्रयास भी। उनका सामाजिक दृष्टिकोण मानवतावादी है इसलिए उसमे यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति और रूढ़िवादी व्यवस्था तथा शोषण चक्र पर तीखा और व्यंग्यात्मक प्रहार अभिव्यक्त हुआ है। जैसा कि ऊपर उन्होंने स्वयं कहा है वे सिर्फ हंगामा खड़ा करने यानि सिर्फ प्रसिद्धि, विवाद या लिखने के लिए नहीं लिखते अपितु वे वर्तमान व्यवस्था में बदलाव चाहते हैं। इसलिए वे वर्तमान देश और समाज का यथार्थ अभिव्यक्त कर उसका समाधान करने हेतु रचनात्मक पहल करते हैं। यह इसलिए भी कि उन्होंने जो देखा, भोगा और महसूस किया था वही अभिव्यक्त भी किया है, इसीलिए उनके काव्य में अभिव्यक्त यथार्थ इतना असरदार है। उन्हीं के शब्दों में –

"मैं जिसे ओढ़ता-बिछाता हूँ।

वो गजल आपको सुनाता हूँ।।"[23]

सन्दर्भ सूची:-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास,काल विभाग, आ. शुक्ल, श्री प्रकाशन, नई दिल्ली,नवीन संस्करण, पृष्ठ-15
2. छायावादोत्तर हिंदी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि - डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय - पृ.-19-20.
3. सं. विजय बहादुर सिंह, दुष्यंत रचनावली भाग 2, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2007, पृष्ठ संख्या 237
4. हाथ सलामत रहने दो - ग़ज़ल संग्रह -माधव कौशिक- भूमिका से
5. हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा - ज्ञानप्रकाश विवेक - पृ. 214
6. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर - संतोष कुमार तिवारी - पृ. 257
7. सं.-विजय बहादुर सिंह, दुष्यंत रचनावली, भाग-1, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण,2007, पृ.-385.

8. सं. विजय बहादुर सिंह, यारों के यार दुष्यंत कुमार, यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ संख्या 127
9. सं. विजय बहादुर सिंह, दुष्यंत रचनावली भाग-1, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2007, पृष्ठ संख्या 118
10. वही, पृष्ठ संख्या 136
11. सं. विजय बहादुर सिंह, यारों के यार दुष्यंत कुमार, यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ संख्या- 93
12. सं. विजय बहादुर सिंह, दुष्यंत रचनावली भाग 1, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2007, पृष्ठ संख्या 120
13. वही, पृष्ठ संख्या 166
14. सिंह बनय, दुष्यंत कुमार और नयी कविता एक अनुशीलन, साहित्यागार, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2000, पृष्ठ संख्या 42
15. सं. विजय बहादुर सिंह, वारों के बार दुष्यंत कुमार, यश पब्लिकेशंस, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ संख्या 120
16. सं. विजय बहादुर सिंह, दुष्यंत रचनावली भाग 2, किताबयर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2007, पृष्ठ संख्या 272
17. वही, पृष्ठ संख्या 288
18. मुनावर डा० सरदार, दुष्यंत कुमार की गज़लों का समीक्षात्मक अध्ययन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2003, पृष्ठ संख्या 34
19. सं. विजय बहादुर सिंह, दुष्यंत रचनावली भाग 2, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2007, पृष्ठ संख्या 275
20. सं. विजय बहादुर सिंह, दुष्यंत रचनावली भाग 2, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2007, पृष्ठ संख्या 377
21. सं. विजय बहादुर सिंह, यारों के यार दुष्यंत कुमार, यश पब्लिकेशंस, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008, पृष्ठ संख्या 129
22. सं. विजय बहादुर सिंह, दुष्यंत रचनावली भाग 2, किताबघर प्रकाशन, नई विल्ली, द्वितीय संस्करण, 2007, पृष्ठ संख्या 95
23. साये में धूप,दुष्यंत कुमार,राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, इक्कीसवां संस्करण,पृष्ठ-62

.....